समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०१४ ● वर्ष : १८ ● अंक : २ (निरंतर अंक : २०६)

मासिक समाचार पत्र

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

श्री राजनाथ सिंह

श्री लालकृष्ण आडवाणी

श्री नितिन गडकरी

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया

डॉ. रमन सिंह

"पूज्य बापूजी ! आप देश और दुनिया - सर्वत्र ऋषि-परम्परा की संस्कार-धरोहर को पहुँचाने के लिए अथक तपश्चर्या कर रहे हैं। अनेक युगों से चलते आये मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में आप अपने पल-पल की आहुति देते रहे हैं। उसमें से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें।" - श्री नरेन्द्र मोदी

श्री शिवराज सिंह चौहान

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य का लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए वरिष्ठ राजनेता

ऐसा होता है आत्मसाक्षात्कार !

- पूज्य बापूजी

आत्मसाक्षात्कार मतलब क्या ?

आत्मसाक्षात्कार मतलब जो सत् है, चित् है, आनंद है और साक्षात् है। कल्पित 'मैं-मेरा' ज्ञान द्वारा उड़ जाय और जो वास्तविक है, साक्षात् है, उसीमें अपना 'मैं'पना टिक जाय उसीको 'आत्मसाक्षात्कार' बोलते हैं। भगवान कृष्ण, शिवजी इनका दर्शन एक बात है लेकिन अपने 'मैं' का साक्षात्कार करोगे तो इनका अस्तित्व और अपने 'मैं' का अस्तित्व सब एकरूप दिखेगा। अर्जुन ने पूछा था : **स्थितप्रज्ञस्य का भाषा...**

भगवान श्रीकृष्ण बोले : **प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ...**

'हे अर्जुन ! जिस काल में यह पुरुष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भलीभाँति त्याग देता है और आत्मा से आत्मा में ही संतुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।' (गीता : २.५५)

बोले फिर तो जड़ हो जायेगा। नहीं, वह चैतन्य हो जायेगा ! आत्मसाक्षात्कार के बाद जड़ नहीं होता। जीवन जीने का मजा तो आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आता है, अन्यथा तो बैलगाड़ियों में बँधे बैल की तरह मजदूरी करके मरना है। साक्षात्कारी पुरुष की हाजिरीमात्र से वातावरण आनंदित हो जाता है।

जो श्रीकृष्ण में चम-चम चमकता है, भगवान शिव में समाधि-सुख देता है, माँ जगदम्बा में आदि शक्ति रूप से उभरता है, वही साँईं लीलाशाहजी बापू में ज्ञान देता है और आशाराम में छुपा हुआ जागृत होता है, उसका नाम है आत्मसाक्षात्कार। यदि कोई केवल तीन मिनट के लिए आत्मसाक्षात्कार की अवस्था में स्थित हो जाय तो उसका दुबारा जन्म नहीं होता, वह सदा के लिए जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। अरे ! मुक्त क्या होता है, उसका यह अनुभव हो जाता है :

मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आयी, जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है ।
पता जब चला मेरी हस्ती का मुझको, सिवा मेरे अपने कहीं कुछ नहीं है ।।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

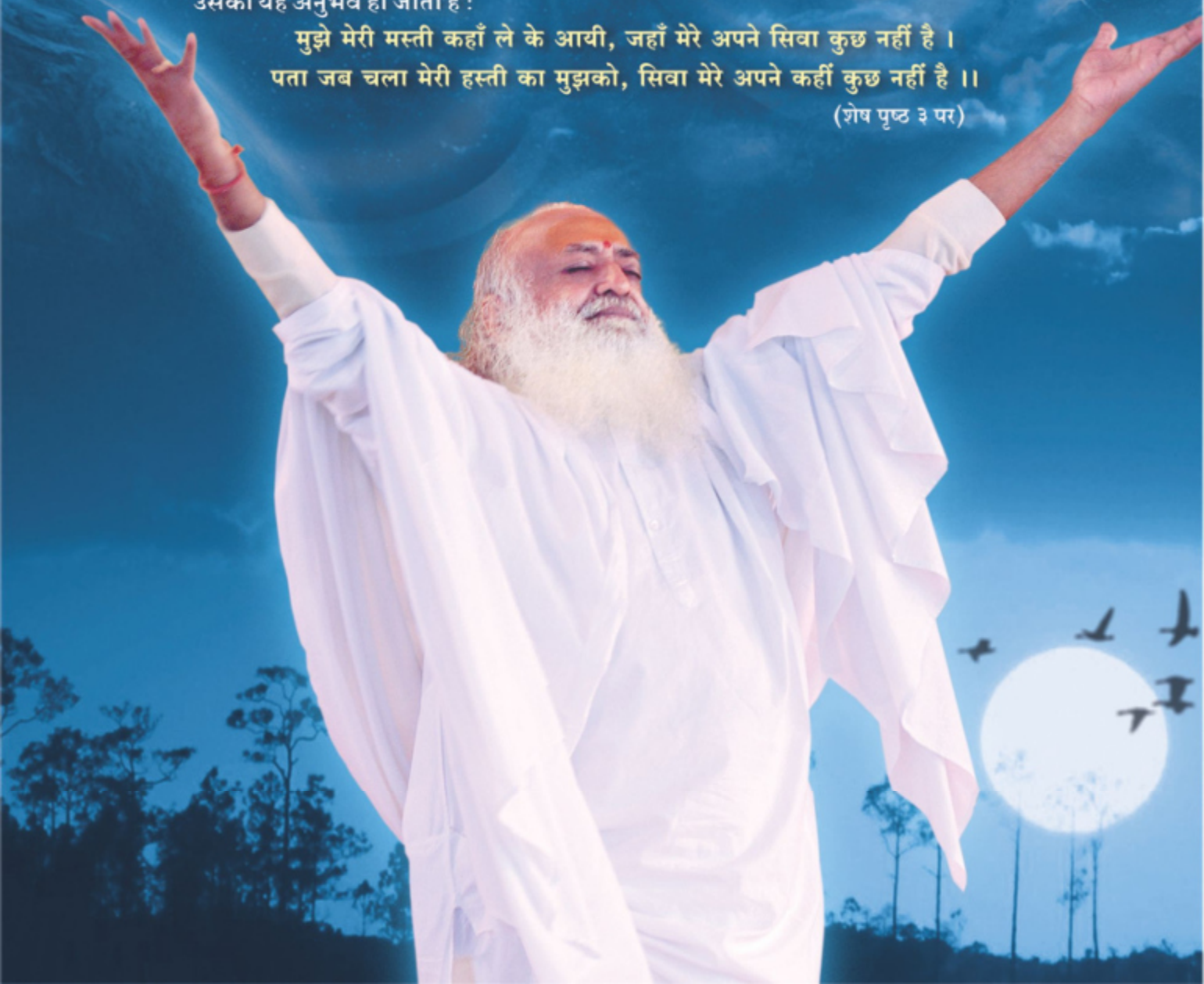

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १८ अंक : २

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०६)

मूल्य : ₹ ३.५०

प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०१४

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी

प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ e-mail : lokkalyansetu@ashram.org ✲ ashramindia@ashram.org

★ web-site : www.lokkalyansetu.org ✲ www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में...

ऐसा होता है आत्मसाक्षात्कार ! २

कैसे होता है पाप का संक्रमण ? ५

दान तब तक अधूरा रहेगा, जब तक... ६

कैसा हो प्रजापालक ? ७

अखंड सौभाग्य देनेवाला व्रत ८

सौभाग्य के सर्जनहार ८

खोज सच्ची स्वाधीनता की... ९

उच्च न्यायालय ने जारी किया नोटिस १०

सर्वपित्री अमावस्या पर 'सामूहिक श्राद्ध'... १०

सारस्वत्य मंत्रजप का प्रभाव १०

कैसे करें प्राणविद्युत का संरक्षण-संवर्धन ? ११

अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में निर्दोष बापूजी के समर्थन में उठी आवाज १२

बच्चे कैसे मनायें 'आत्मसाक्षात्कार दिवस' ? १३

उपासना के लिए स्वर्णकाल १३

दर्शन दे दो गुरुदेव (काव्य) १३

व्यसनमुक्त समाज की ओर... १४

धन-संग्रह नहीं, धर्म-संग्रह करें १५

गुरु-शिष्य परम्परा से दूर होगी हिंसा : न्यायाधीश १५

बालकों के लिए उत्तम आहार : देशी गाय का दूध १८

पुण्यदायी तिथियाँ १८

पपीता : एक उत्तम टॉनिक १९

भाव के साथ विवेक जरूरी है २०

टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z news — रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

मंगलमय सत्संग — www.ashram.org पर उपलब्ध

आत्मसाक्षात्कार कठिन नहीं है

(मुखपृष्ठ २ का शेष)

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि॥

'यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, तो भी तू ज्ञानरूप नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा।' (गीता : ४.३६)

कोई अति पापी हो, महापापी हो किंतु यदि वह आत्मज्ञान पा ले तो तत्काल तर जाय। लोगों ने आत्मसाक्षात्कार को कठिन मान लिया है। 'ज्ञान पाना मुश्किल है... असम्भव है... हम तो पापी, दीन-हीन हैं... हमारी क्या बिसात ? हम तो संसारी हैं... यह तो साधुओं का काम है...'

ऐसा सोचकर अपने को तुच्छ बना लिया है।

अरे ! तुम आत्मा हो। निष्फिक्र, निश्चिंत एवं निर्भय होकर जियो। जो हो गया उसे सपना समझो। जो हो रहा है वह भी सपना है। जो होगा वह भी एक दिन सपना हो जायेगा। अपने को परमात्मप्राप्ति के लिए अयोग्य मानना अथवा पापी मानना व दोषों से ऊपर न उठना ही बड़ा पाप है।

अपि चेदसि पापेभ्यः... चाहे कोई दुराचारियों में आखिरी नम्बर के हों, फिर भी किये हुए पापों को फिर से न करना, की हुई भूल को फिर से न दोहराना, आर्तभाव से भगवान से प्रार्थना करना उसका सब पापों से, दुःखों से सदा के लिए पिंड छुड़ा देता है।

सच्चे हृदय की प्रार्थना अंतर्यामी स्वीकार करते हैं व मनोरथ पूरा करते हैं। अतः गिरे मत रहो, ऊपर उठो !

अपने भूतकाल को याद कर-करके विचारों के जाल में कब तक फँसते रहोगे ? मन की मान्यताओं में कब तक उलझते रहोगे ? सब बंधनों को काटकर उठ खड़े हो, मुक्त हो जाओ। शरीर एवं मन के किले को छोड़कर आत्मा के आकाश में विहार करो। ऐसा ज्ञान पा लो कि तुम जीते-जी ही काल से परे हो जाओ और काल सिर कूटता रह जाय। ऐसा ज्ञान पाना कठिन नहीं है किंतु लोगों को अज्ञान को छोड़ने में, अपनी मान्यताओं को तोड़ने में कठिनाई लगती है। अज्ञान और मान्यताओं में बहने की बेवकूफी सदियों की है, अतः उसे छोड़ना कठिन लगता है। नहीं तो ईश्वर को पाने में क्या कठिनाई है ! ईश्वर तो अपना आत्मस्वरूप है।

आप बस अपना उद्देश्य बना लो

ईश्वरप्राप्ति में जो सुख है और समाज का भला है उसकी बराबरी में कुछ नहीं है। अपने स्वरूप का, अपने आत्मा का पता चल जाना यह बड़े-में-बड़ी उपलब्धि है। इसके अतिरिक्त जगत की सारी उपलब्धियाँ दिखनेमात्र की हैं। ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा। भगवान को पाने की महत्ता समझ में आ जाय और भगवान को पाने का इरादा पक्का हो जाय तो आपकी ९५ प्रतिशत साधना हो गयी ! बाकी ५ प्रतिशत में ३ प्रतिशत आपकी भावना, श्रद्धा और २ प्रतिशत आपकी साधना। केवल उद्देश्य बना लो ईश्वरप्राप्ति का।

ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य होने से आदमी ईमानदारी से आध्यात्मिक बनेगा। ईमानदारी से आध्यात्मिक व्यक्ति नैतिकता का धनी हो जायेगा। आध्यात्मिक उन्नति चाहनेवाले की नैतिकता स्वाभाविक प्रकट होती है। भौतिक सुख-सुविधाएँ खिंचकर उसके चरणों में आ जाती हैं, फिर भी वह वाहवाही, सुविधाओं का गुलाम नहीं होता और असुविधा व निंदा का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता। (शेष पृष्ठ १६ पर)

कैसे होता है पाप का संक्रमण

'देवलस्मृति' में आता है कि पापी के साथ बातचीत करने से, उसके स्पर्श से, उसकी श्वास लगने से, उसके साथ चलने, बैठने, खाने से एवं उसके लिए यजन (यज्ञ, पूजा-अर्चना आदि कार्य) करने से तथा उसे पढ़ाने अथवा उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित करने से पाप दूसरे मनुष्य को संक्रमित हो जाता है।

संलापस्पर्शनिःश्वाससहयानाशनासनात्।
याजनाध्यापनाद्यौनात् पापं संक्रमते नृणाम्॥

(गरुड़ पुराण : २.६५; देवलस्मृति : ३३)

दूसरों को सताना, निर्दोष प्राणियों को मारना, झूठ बोलना, हिंसा, चोरी, व्यभिचार आदि कई प्रकार के पाप शास्त्रों में बताये गये हैं। उनमें से परनिंदा को 'महापाप' माना गया है।

'स्कंद पुराण' में आता है :

परनिन्दा महापापं परनिन्दा महाभयम्।
परनिन्दा महद्दुःखं न तस्याः पातकं परम्॥

'परनिंदा महान पाप है, परनिंदा महान भय है, परनिंदा महान दुःख है और परनिंदा से बढ़कर दूसरा कोई पातक नहीं है।' (ब्रा. चा. मा. : ४.२५)

इसीलिए संत कबीरदासजी ने भी कहा है :

कबीरा निंदक ना मिलो पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर लाख पापिन को भार॥

पूर्वकाल में शतघ्नु नामक राजा की धर्मपत्नी शैव्या का शास्त्रवचनों में दृढ़ विश्वास था। एक बार कार्तिक पूर्णिमा को उपवास करके दोनों ने गंगाजी में स्नान किया। बाहर आने पर राजा का पुराना गुरुभाई जो निंदक बन चुका था, वह आता हुआ दिखा। रानी जानती थी कि शास्त्रों में आता है कि 'किसी पापी के दर्शन से भी पाप लगता है' तो वार्तालाप से होनेवाले पाप की तो गिनती ही नहीं है। गलती से अगर निंदक दिख जाय तो शास्त्रों में इसके प्रायश्चित के लिए आता है कि सूर्य, गंगाजी, सद्गुरु आदि के दर्शन कर लेने चाहिए। अतः रानी उससे बिना बातचीत किये सूर्यदेव का दर्शन करके आगे निकल गयी। केवल तीर्थ में ही नहीं बल्कि किसी भी देश, काल, परिस्थिति में पापी व्यक्ति के संग से हानि ही होती है। यह जानते हुए भी राजा ने उस व्यक्ति से बातचीत की। इससे राजा में उस पापी व्यक्ति के पाप का संक्रमण हो गया।

समय आने पर राजा की मृत्यु हुई। महारानी शैव्या भी पति की चिता के साथ सती हो गयी। दूसरे जन्म में रानी काशीनरेश की कन्या हुई और पाप के संक्रमण के कारण राजा कुत्ता बना। रानी को पूर्वजन्म का वृत्तांत याद था। उसने अपने पूर्व जन्म के पति को याद दिलाया कि पापी से बातचीत करने से उसको कुत्ते की योनि प्राप्त हुई है। कुत्ते को पूर्वजन्म का स्मरण हो आया। उसने खाना-पीना छोड़ दिया और शीघ्र ही प्राण त्याग दिये किंतु अभी पाप से उसका छुटकारा नहीं हुआ था, वह सियार बन गया। उसकी पूर्व की पत्नी ने फिर उसे पुराने पापों का स्मरण कराया। राजा ने सियार का शरीर भी छोड़ दिया। फिर उसे क्रमशः भेड़िया, गीध, कौआ के बाद मयूर की योनि प्राप्त हुई। उसी समय राजा जनक ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया था। (शेष पृष्ठ १६ पर)

दान तब तक अधूरा रहेगा, जब तक...

– श्री अखंडानंदजी सरस्वती

भगवान ने देखा कि राजा बलि बड़ा दानी और धर्मात्मा है, हमारे भक्त प्रह्लाद का पौत्र है परंतु इसे इसका अभिमान है। इसलिए भगवान छोटे बनकर, वामन बनकर बलि के पास आये क्योंकि हृदय में भगवान नन्हे-से प्रकट होते हैं।

राजा बलि ने बड़े भाव से उनकी स्तुति की और स्वागत-सत्कार किया। वामन भगवान ने बलि को दान देने की एक पद्धति बतायी। बलि ने कहा : ''आपको जो चाहिए, सो ले लीजिये।'' बलि पूरी पृथ्वी को अपनी समझते थे। बलि ने दान का संकल्प किया। वामन भगवान ने बलि का लोक-परलोक दो पगों में नाप लिया। परंतु भगवान का मूल उद्देश्य लोक-परलोक नहीं था बल्कि देनेवाले के अभिमान को लेने का था इसलिए उन्होंने बलि को बाँध दिया।

लोगों ने कहा : 'अरे, जिसने अपना लोक-परलोक सब कुछ दे दिया, उसके साथ ऐसा व्यवहार !' लेकिन बलि ने ऐसा नहीं सोचा। उसको होश आया कि 'मेरी त्रुटि कहाँ है ? त्रुटि यह है कि मेरे अंदर दातापने का अभिमान है।' बलि ने हाथ जोड़कर कहा : ''महाराज ! मैं कोई ठग नहीं हूँ, आपको धोखा नहीं देना चाहता, सचमुच सब कुछ देना चाहता हूँ।'' भगवान ने पूछा : ''तो बताओ ! मैं अपना तीसरा पग कहाँ रखूँ ?''

बलि : ''पदं तृतीयं कुरु शीर्ष्णि मे निजम्।

प्रभो ! दी हुई चीज से देनेवाला बड़ा होता है। इसलिए आप अपने तीसरे पग में उसीको नाप लीजिये। मेरे सिर पर अपना चरणारविंद रख दीजिये।''

अब आप कल्पना कीजिये कि जिसके सिर पर भगवान स्वयं अपना चरणारविंद रख दें वह कितना धन्य-धन्य हो जायेगा ! ईश्वर जीव को अमृत दे सकते हैं परंतु जीव ईश्वर को क्या दे सकता है ? जीव तो अपना 'मैं', अपना अभिमान ही ईश्वर को दे सकता है और जब तक वह स्वयं 'मैं'पने के अभिमान का समर्पण नहीं कर देता, तब तक उसका दान पूरा नहीं होता।

कैसा हो प्रजापालक ?

(महाराजा अग्रसेन जयंती : २५ सितम्बर)

पूर्वकाल में प्रतापनगर के राजा बल्लभ बड़े दयालु, धार्मिक व प्रजाहितैषी स्वभाव के थे । भगवत्कृपा से उन्हें एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम 'अग्र' रखा गया । बालक बड़ा हुआ तो उसको पढ़ने के लिए गुरुकुल भेजा गया । जिन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा ऋषि-परम्परा पर आधारित गुरुकुलों में होती है, उनकी लौकिक उन्नति के साथ नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी सहज में होती है । बालक अग्र के मन पर राजनीति, अर्थशास्त्र आदि के ज्ञान के साथ सत्य, परहितपरायणता, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे शास्त्रों एवं महापुरुषों के उच्च सिद्धांत अंकित हो गये ।

एक दिन युवराज अग्र शिकार खेलने गया । वहाँ निर्दोष प्राणियों को तड़पता हुआ देखकर अग्र का मन छटपटाने लगा कि 'खेल-खेल में कितने ही निर्दोष जीवों की हत्या हो जाती है । ईश्वर ने सभी जीवों को जीने का अधिकार दिया है फिर इन निर्दोषों से जीने का अधिकार क्यों छीना जाता है ? मनुष्य किसीको जीवन दे नहीं सकता तो उसे दूसरे का जीवन छीन लेने का क्या अधिकार है ?' इस विचार ने अग्र को झकझोर दिया । प्रखर विवेकी अग्र ने प्रतिज्ञा की : ''आज के बाद कभी शिकार नहीं करूँगा ।''

समय पाकर राजा बल्लभ अग्र को राज्य सौंपकर तप करने चले गये । अब अग्र का नाम हो गया महाराज अग्रसेन ।

'आध्यात्मिकता के बिना नैतिकता टिक नहीं सकती और भौतिकता दुःख दिये बिना रह नहीं सकती । आध्यात्मिकता के बिना सच्ची उन्नति और सच्चा सुख सम्भव ही नहीं है ।' - महापुरुषों के ये सिद्धांत उनके रोम-रोम में समा गये थे । वे आध्यात्मिकता में ऊँचे उठे महापुरुषों के मार्गदर्शन में राज्य करते थे ।

महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में भारतीय संस्कृति के चारों तत्त्वों - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को महत्त्व दिया परंतु प्रधानता धर्म और मोक्ष को दी । जहाँ मोक्ष को जीवन के लक्ष्य का दर्जा प्राप्त हो और धर्म के निमित्त ही जहाँ सारे कार्य होते हों, वहाँ के जनजीवन में परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना होना स्वाभाविक है । राजा के अग्रोहा नगर में एक लाख परिवार बसते थे । यदि किसी व्यक्ति को व्यापार में घाटा हो जाता तो सभी परिवार उसे एक-एक रुपये का सहयोग करते । इससे उसके पास एक लाख रुपये एकत्र हो जाते, जिससे वह अपने व्यापार को फिर से व्यवस्थित कर लेता था ।

जब कोई नया परिवार आकर अग्रोहा में बसता तो उसे भी सभी परिवारों की ओर से एक-एक रुपया और एक-एक ईंट का सहयोग दिया जाता था । इससे आगंतुक के पास एक लाख रुपये और एक लाख ईंटें एकत्र हो जातीं, जिससे वह मकान भी बना लेता और व्यापार भी शुरू कर लेता । राज्य की शासन-व्यवस्था इतनी सुव्यवस्थित थी कि किसीको घरों में ताले नहीं लगाने पड़ते थे । महाराजा अग्रसेन ने निर्दोष पशुओं की हत्या (शेष पृष्ठ १७ पर)

अखंड सौभाग्य देनेवाला व्रत

(हरितालिका तीज : २८ अगस्त)

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया को सौभाग्यवती महिलाएँ अखंड सौभाग्य (पति की दीर्घायु) के लिए व कुमारी कन्याएँ उत्तम वर-प्राप्ति के लिए 'हरितालिका तीज' का व्रत करती हैं।

इस व्रत के संदर्भ में कथा आती है कि पार्वतीजी भगवान शिव को पतिरूप में प्राप्त करने का निश्चय करके तपस्या कर रही थीं। उनकी परीक्षा लेने के लिए भगवान शंकर ने सप्तर्षियों को उनके पास भेजा। सप्तर्षियों ने पार्वतीजी के पास आकर शिवजी में कई अवगुण गिना डाले और साथ ही भगवान नारायण को सद्गुणों की खान बताकर उनसे विवाह करने का प्रस्ताव रखा परंतु पार्वतीजी अपने निश्चय पर दृढ़ रहीं, उन्होंने कहा : **''नारद बचन न मैं परिहरऊँ...**

गुर कें बचन प्रतीति न जेही।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही॥

मैं नारदजी के वचनों को नहीं छोड़ूँगी, चाहे घर बसे या उजड़े इससे मैं नहीं डरती। जिसको गुरु के वचनों में विश्वास नहीं है, उसको सुख और सिद्धि स्वप्न में भी सुगम नहीं होती।''

पार्वतीजी आगे कहती हैं : ''मेरा तो करोड़ जन्मों तक यही हठ रहेगा कि या तो शिवजी को वरूँगी, नहीं तो कुमारी ही रहूँगी। स्वयं शिवजी सौ बार कहें तो भी नारदजी के उपदेश को न छोड़ूँगी।'' अपने लक्ष्य पर दृढ़ता और गुरुवचनों में अटूट श्रद्धा के बल पर पार्वतीजी का मनोरथ पूरा हुआ। देवी पार्वती ने भाद्रपद शुक्ल तृतीया हस्त नक्षत्र में आराधना की थी, इसीलिए इस तिथि को यह व्रत किया जाता है।

यह पर्व संयम, त्याग, धैर्य तथा एकनिष्ठ पातिव्रत-धर्म जीवन में लाने की शिक्षा तो देता ही है, साथ ही **शिष्य की अपने गुरु के वचनों में कैसी निष्ठा होनी चाहिए यह सीख भी देता है।**

इस दिन बहुत-सी महिलाएँ फलाहार तो दूर, जल तक नहीं लेतीं। प्रातःकाल तिल और आँवले के बारीक चूर्ण से स्नान करने के बाद सौभाग्यप्राप्ति व ईश्वरप्रीति के लिए व्रत करने का संकल्प किया जाता है। **(शेष पृष्ठ १६ पर)**

सौभाग्य के सर्जनहार

नवम्बर २००८ में मेरी पत्नी को ट्यूबल प्रेग्नेन्सी (गर्भाशय की जगह ट्यूब में बच्चा) हो गयी थी, जिससे उसकी एक ट्यूब फट गयी और उसने काम करना बंद कर दिया। अब केवल एक ट्यूब होने से दूसरी बार बच्चा होने की सम्भावना कम थी। मैंने और मेरी पत्नी ने २००९ के चेटीचंड शिविर में पूज्य बापूजी से संतानप्राप्ति की प्रार्थना की। बापूजी ने कहा : ''धीरज रखो, हो जायेगा।'' और बापूजी के आशीर्वाद से मेरी पत्नी ने जून २०१० में एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया।

बच्चे को देखकर फाजिल्का की मशहूर डॉक्टर, जिनसे हमने इलाज कराया था, उन्होंने कहा : ''मात्र दो प्रतिशत लोग ही होते हैं जिनको एक ट्यूब पर बच्चा हो पाता है। आप उन सौभाग्यशाली लोगों में से एक हैं।'' यह सुनकर हमारी आँखें गुरुदेव की करुणा याद करके अहोभाव से भर आयीं, हृदय गद्गद हो गया कि बापूजी कितने दयालु हैं !

– अमित अरोड़ा, फाजिल्का (पंजाब)

खोज सच्ची स्वाधीनता की

मगधराज की राजकुमारी सुहासिनी जब विवाह योग्य हुई तो उसके लिए योग्य वर की तलाश होने लगी । विवाह के बारे में राजकुमारी ने कहा : ''मैं पूर्ण सुख पाना चाहती हूँ । अतः मैं ऐसे युवक से विवाह करना चाहती हूँ जो पूरी तरह स्वतंत्र हो । पराधीन को तो स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता ।''

राजा ने पुत्री की बात मानकर स्वयंवर की व्यवस्था कर दी । राजकुमारों, विद्वानों, व्यवसायियों और कलाकारों के लिए उनके-उनके समुदायों में बैठने की व्यवस्था की गयी । सबसे पहले सुहासिनी राजकुमारों के समुदाय में गयी और उनसे पूछा : ''आप लोगों का राज्य-अधिकार तो प्रजाजनों और सामंतों की इच्छा पर निर्भर रहता है । यदि वे रुष्ट हो गये तो फिर आप कैसे राजा बनेंगे ? फिर आप स्वतंत्र कहाँ हुए ?''

राजकुमार निरुत्तर हो गये । फिर राजकुमारी ने विद्वानों से जाकर पूछा : ''गुण-ग्राहकों के अभाव में आप अपनी विद्या का परिचय कैसे देंगे ?''

व्यापारी वर्ग से राजकुमारी ने पूछा : ''दुर्भिक्ष पड़ा, अराजकता फैली अथवा उत्पादन की खपत नहीं हुई तो व्यवसाय कैसे चलेगा ? आप भी तो किसी पर निर्भर हैं !''

अंत में राजकुमारी कलाकारों के पास पहुँची और बोली : ''आपकी योग्यता का मापदंड तो दर्शकों के पास है । उनको अच्छा न लगा तो ? वे देखेंगे तभी तो आप दिखा सकोगे ।

आप में से कोई भी आत्मनिर्भर नहीं है ।''

राजकुमारी की बातों से सब निराश हो गये और वह खुद भी निराश हो गयी । उसने सबसे मिलना-जुलना बंद कर दिया । उसी दौरान कौदन्य मुनि का राज्य में आगमन हुआ । मगध के राजा कन्या समेत उनके दर्शन के लिए उपस्थित हुए और उन्होंने मुनि के चरणों में अपना दुखड़ा सुनाया । इस पर कौदन्य मुनि मुस्कराये और राजकुमारी से बोले : ''दूसरों के सहारे सुखी रहने की इच्छा करनेवाली तुम भी क्या पराधीन नहीं हुई ?''

बात काँटे की तरह राजकुमारी के हृदय में चुभ गयी । दूसरों को पराधीन कहनेवाली उस राजकुमारी ने पहली बार अनुभव किया कि वह भी पराधीन है ।

मुनि बोले : ''अन्य राजकुमारियों की तुलना में तुम बहुत विवेकवान हो परंतु अब और भी आगे बढ़ो । तुम जो बाहरी रूप से स्वतंत्र व्यक्ति की खोज कर रही हो वह कभी पूरी नहीं हो सकती । स्वतंत्र तो केवल आत्मज्ञान, आत्मानुभव प्राप्त करके ही हुआ जा सकता है । और ऐसे आत्मानुभवी महापुरुष तुम्हें मिल भी जायें तो पूर्ण निर्दुःख, पूर्ण सुखी होने के लिए तुम्हें मैत्रेयी की तरह उनके ज्ञान का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना होगा ।''

आत्मसुख से तृप्त उन महापुरुष के दर्शन-सत्संग से राजकुमारी का विवेक जगा । वह सोचने लगी, 'सबसे बड़ा बंधन तो जन्म-मरण का है । भव-बंधन से अपने को मुक्त किये बिना स्वाधीनता कहाँ ? सच्चा सुख कहाँ ? हयात ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का सत्संग-मार्गदर्शन और तदनुरूप जीवन ही स्वाधीनता एवं विकास का मार्ग है ।'

उस विवेकी राजकुमारी ने जीवनभर सुखी रख पानेवाला जीवनसाथी खोजने का विचार छोड़ दिया और कौदन्य मुनि से गुरुदीक्षा लेकर परम सुखदाता जीवनदाता को पाने के रास्ते चल पड़ी और अपना 'सत्' स्वभाव, जो सब बदलावों को देखता है व ज्यों-का-त्यों रहता है, 'चित्' स्वभाव, (शेष पृष्ठ १७ पर)

उच्च न्यायालय ने जारी किया नोटिस

गुजरात उच्च न्यायालय में पूज्य बापूजी की जमानत याचिका के संदर्भ में बापूजी के वकील द्वारा अपना पक्ष पेश किया गया कि 'फरियादी महिला द्वारा की गयी शिकायत और जाँच एजेंसी के समक्ष दिया गया बयान दोनों में विरोधाभास है।' तथाकथित घटना बतायी जाती है २००१ की और शिकायत की जाती है २०१३ में यानी १२ साल बाद... यह क्या ! शिकायतकर्ता द्वारा लगाये गये आरोप में कोई तथ्य नहीं है, कोई ठोस सबूत नहीं है। पूज्य बापूजी को गलत तरीके से फँसाया जा रहा है। शिकायतकर्ता द्वारा की गयी शिकायत बिल्कुल बेबुनियाद और आधारहीन है। इस परिस्थिति में बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए। जमानत के संदर्भ में उच्च न्यायालय द्वारा राज्य सरकार और जाँच एजेंसी को नोटिस जारी किया गया है।

सारस्वत्य मंत्रजप का प्रभाव

पहले मैं एक साधारण विद्यार्थी था। पूज्य बापूजी से दीक्षा में मिले सारस्वत्य मंत्र के नियमित जप तथा बापूजी द्वारा बतायी गयीं बुद्धिशक्ति बढ़ानेवाली युक्तियों का अवलम्बन लेने से मुझे बहुत फायदे हुए और पढ़ाई में भी अच्छे अंक आने लगे। मैं साल में एक बार सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान जरूर करता हूँ। इससे १०वीं कक्षा में मुझे ९१.८% अंक मिले। बारहवीं के बाद मैंने जे.ई.ई. २०१३ (एडवांस्ड) की परीक्षा दी। जे.ई.ई. की परीक्षा में हर साल करीब ११-१२ लाख विद्यार्थी बैठते हैं, जिनमें से केवल ९ हजार ही चुने जाते हैं। उस परीक्षा में प्रथम ५०० विद्यार्थियों में मेरा चयन हुआ और आई.आई.टी. इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नई में मुझे प्रवेश मिला। मेरे घरवालों ने तथा मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे इतनी सफलता प्राप्त होगी। यह सब पूज्य बापूजी से मिले सारस्वत्य मंत्र के जप, एकाग्रता व संयम का ही प्रभाव है। – मोहन भम्भानी, भावनगर (गुजरात)

सर्वपित्री अमावस्या पर 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन

जिन्हें अपने पूर्वजों की परलोकगमन की तिथियाँ मालूम नहीं हैं, उन्हें सर्वपित्री अमावस्या (२३ सितम्बर) के दिन श्राद्ध-कर्म करना चाहिए। विभिन्न संत श्री आशारामजी आश्रमों में इस दिन 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन होता है, जिसमें आप सहभागी हो सकते हैं। इस हेतु अपने नजदीकी आश्रम में १५ सितम्बर तक पंजीकरण करा लें।

श्राद्ध हेतु अपने साथ दो बड़ी थाली, दो कटोरी, दो चम्मच, ताँबे का एक लोटा और आसन लेकर आयें। अन्य आवश्यक सामग्री श्राद्ध-स्थल पर उपलब्ध रहेगी। श्राद्धकर्म सम्पन्न होने के बाद लाये हुए बर्तन सब वापस ले जाने हैं। अधिक जानकारी हेतु पहले ही अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क कर लें। (श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की पुस्तक 'श्राद्ध महिमा' पढ़ें।)

कैसे करें प्राणविद्युत का संरक्षण-संवर्धन ?

हर व्यक्ति, वस्तु, स्थान में एक प्रकार की ऊर्जा होती है जिसे 'प्राणविद्युत' कहते हैं। विभिन्न जीवों एवं स्थानों में यह भिन्न-भिन्न मात्रा एवं रूपों में होती है। नदी, पर्वत, झरना, समुद्र, सरोवर का तट, प्राकृतिक वातावरण, देवालयों, आश्रमों में जाने पर ताजगी-स्फूर्ति व दिव्यता का अनुभव होता है। इन स्थानों पर प्राणविद्युत की बहुलता ही इसका मुख्य कारण है। उच्च कोटि के संत-महापुरुषों में प्राणविद्युत की उत्कृष्टतम अवस्था होती है इसलिए उनके सत्संग-सान्निध्य में बैठने से मन पुलकित होता है, भावनाओं में दिव्यता का संचरण होने लगता है और उच्च विचारों का प्रवाह शुरू हो जाता है। परंतु निंदक, कपटी, दुराचारी, हिंसक, दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों में प्राणविद्युत की विकृत अवस्था होती है। अतः ऐसे व्यक्ति से सम्पर्क होते ही मन उचटने लगता है और असहज हो जाता है।

प्राणविद्युत जीवन को अभिव्यक्त करती है। इसके बिना शरीर शव के समान होता है। यह जिसमें जितनी परिष्कृत मात्रा में होती है, वह उतना ही सात्त्विक आभा से आलोकित होता है। साधक जब जप, ध्यान आदि करता है तो प्राणविद्युत परिष्कृत और पवित्र होती है, जिससे ओज-तेज, बल-बुद्धि का विकास होता है और साधक क्रमशः ऊँची अवस्थाओं में बढ़ता चला जाता है। पर प्राणविद्युत का संरक्षण न करने पर उसका पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

जो भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने साधनाकाल में अत्यंत सतर्क रहकर इस प्राणविद्युत का पूर्ण विकास किया। श्री रामकृष्ण परमहंस साधनाकाल में विशिष्ट साधना-प्रयोगों के दौरान सदा अपने शरीर को कम्बल से ढँके रहते थे। इस दौरान प्राणविद्युत तीव्र गति से रूपांतरण की प्रक्रिया में होती है। अतः इसे इसी रूप में बनाये रखने के लिए स्पर्श निषिद्ध माना जाता है। प्राणविद्युत की हानि को रोकने के लिए कुछ सावधानियाँ रखना आवश्यक है।

भारतीय अध्यात्म-विज्ञान के अनुसार शरीर के नुकीले भागों (हाथ-पैर की उँगलियों) से शरीर की संचित प्राणविद्युत दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करती है। दूसरे को स्पर्श करने से, हाथ मिलाने से आपकी शक्ति का ह्रास सम्भव है। साधकों को हाथ मिलाने से बचना चाहिए। हर व्यक्ति के अपने संस्कार होते हैं। चरण छूने पर इन संस्कारों का स्थानांतरण होता है। अतः जिस किसीके चरण स्पर्श करना या करवाना साधना में बाधक हो सकता है।

वाणी का अधिक व्यय, दूसरों से आँख-से-आँख मिलाकर बात करना, नंगे पैर चलना, एक ही थाली में मिलकर भोजन करना, बाजारू खाद्य पदार्थ (होटल आदि में खाना) या जिस किसीके हाथ का भोजन करना, दूसरों के जूते-चप्पल, तौलिया, कपड़ा, बिस्तर, बर्तन आदि का प्रयोग करना - इनसे बचना चाहिए। ये साधना में उन्नति के बाधक हैं।

वैज्ञानिक भी मानते हैं कि उपरोक्त चीजों के साथ व्यक्ति के बायोइलेक्ट्रिसिटी से जुड़े तत्त्व और बायोमैग्नेटिक तत्त्व लिपटे तथा घुले हुए रहते हैं। अतः इनके प्रभाव से बचने के लिए दूसरे व्यक्ति के उपयोग की वस्तुओं से बचना चाहिए।

अगर साधक सद्गुरु के बताये अनुसार साधना, सेवा, सत्कर्म करते हुए प्राणविद्युत का संरक्षण-संवर्धन करता है तो साधना में शीघ्र ही उन्नत होकर ओज, तेज, शारीरिक एवं आत्मिक बल प्राप्त करके परम बल परमात्म-सामर्थ्य के साथ एकाकार होने की योग्यता भी पा लेता है।

अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में निर्दोष बापूजी के समर्थन में उठी आवाज

२० से २६ जून तक गोवा में तृतीय 'अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन' सम्पन्न हुआ। इसमें भारत, नेपाल एवं बंगलादेश के १२५ से अधिक हिन्दू संगठनों के ४०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन में पूज्य बापूजी एवं अन्य साधु-संतों के खिलाफ किये जा रहे षड्यंत्रों व दुष्प्रचार के खिलाफ आवाज उठायी गयी। आश्रम प्रवक्ता नीलम दुबे एवं आश्रम के वक्ता रामा भाई ने भी अधिवेशन को सम्बोधित किया।

इसमें संतों पर हो रहे अत्याचारों को रोकना, भारत एवं नेपाल की हिन्दू राष्ट्र के रूप में पुनर्स्थापना, सम्पूर्ण गौ-हत्याबंदी, हिन्दुओं की सुरक्षा करने की नीति निर्धारित करना आदि देशहित के मुद्दों पर एकजुट होकर कार्य करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

संतों की रक्षा हेतु हिन्दू संगठनों ने खोला मोर्चा

पूज्य बापूजी व अन्य संतों के दुष्प्रचार के खिलाफ एवं अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा हेतु विभिन्न हिन्दू संगठनों ने 'राष्ट्रीय हिन्दू आंदोलन' के तहत एकजुट होकर मोर्चा खोल दिया है।

२७ जुलाई को बैंगलोर में हिन्दू जनजागृति समिति, श्री योग वेदांत सेवा समिति, भारत क्रांति सेना, श्रीराम सेना, कर्नाटक प्रजाशक्ति संघ, चाणक्य जनगणमन, सनातन संस्था इ. संगठनों ने धरना दिया और ज्ञापन भी सौंपा।

ज्ञापन के कुछ अंश : समाज के हित में अविरत कार्य करनेवाले साधु-संतों पर एक व्यापक षड्यंत्र के तहत झूठे आरोप लगाकर उनको बदनाम करने की मुहिम चलायी जा रही है। हिन्दू धर्म के आधारस्तम्भ संतों एवं देवी-देवताओं के बारे में हिन्दुओं के मन कलुषित हो जाने पर उन्हें सहजता से धर्म-परिवर्तन के जाल में फँसाया जा सकता है, इस कूटनीति के तहत समाज को गुमराह किया जा रहा है।

शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती, स्वामी नित्यानंदजी, स्वामी केशवानंदजी जैसे अनेक संतों को बदनाम करने के प्रयत्न किये गये, बाद में वे निर्दोष साबित हुए। अमृतानंदमयी माँ, कृपालुजी महाराज आदि कई संतों का भी दुष्प्रचार किया गया। वर्तमान में करोड़ों लोगों के आस्थाकेन्द्र परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को पिछले ११ महीनों से जेल में रखा गया है। बापूजी पर लगे किसी भी आरोप की पुष्टि नहीं हुई है, फिर भी विधर्मियों ने उनकी बदनामी की, जो अभी तक जारी है। इस प्रकार सनातन संस्कृति को नष्ट करने का षड्यंत्र चल रहा है।

बच्चे कैसे मनायें 'आत्मसाक्षात्कार दिवस' ?

पूज्यश्री के 'आत्मसाक्षात्कार दिवस' (२६ सितम्बर) के दिन विद्यार्थियों को 'बाल संस्कार केन्द्रों' में पूज्य बापूजी की 'जीवन झाँकी' दिखायें ('प्रेरणा ज्योत' वीसीडी से) और उन्हें बतायें कि जन्मदिवस तो दो करोड़ लोगों का रोज होता है लेकिन 'आत्मसाक्षात्कार दिवस' तो किन्हीं-किन्हीं विरले ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का, कभी-कभी होता है । बाल्यावस्था और युवावस्था में जितनी सरलता से आत्मसाक्षात्कार हो सकता है, उतनी सरलता से बड़े होने पर नहीं होता । जिन महापुरुषों ने कम आयु में ही आत्मज्ञान पाया उनके नाम (बालक ध्रुव, संत ज्ञानेश्वरजी, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज, पूज्य बापूजी आदि) तथा उनके सद्गुणों के बारे में बच्चों से पूछें व चर्चा करें । फिर संकल्प करवायें कि 'आज से हम भी ये सद्गुण अपने जीवन में लायेंगे, जिससे हम भी आत्मज्ञान पा सकें । इस दिन ध्यान विशेष रूप से करवायें (सहज ध्यान, बंसीनाद ध्यान आदि ध्यान की सीडी भी चला सकते हैं) । इस पावन दिवस पर केन्द्र शिक्षक अपने केन्द्र में 'प्रतिभा-खोज स्पर्धा' की परीक्षा का भी आयोजन करें और समिति के सहयोग से विद्यार्थियों द्वारा गरीबों में अन्न-वितरण, अस्पतालों में फल-वितरण आदि सेवाकार्य भी करवा सकते हैं।

सारस्वत्य मंत्र अनुष्ठान का सुनहरा अवसर

नवरात्र के दिनों में विद्यार्थी सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान करें तथा यथासम्भव मौन रहें, जप-ध्यान करें, सफेद वस्त्र पहनें तथा गद्दे पर शयन न करें। भोजन में केवल दूध-चावल की खीर लें तो अच्छा । पूज्य बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र के जप एवं अनुष्ठान से अनेक विद्यार्थी असाधारण प्रतिभा के धनी हुए हैं । अतः विद्यार्थी इन नौ दिनों का विशेष लाभ लें।

उपासना के लिए स्वर्णकाल

(शारदीय नवरात्र : २५ सितम्बर से ३ अक्टूबर)

नवरात्र व्रत-उपवास, मौन, जप-ध्यान, जागरण (रात्रि १२ बजे तक), मंत्र-अनुष्ठान के लिए स्वर्णकाल है । जो पूरे नवरात्र का उपवास-व्रत न कर सकता हो वह सप्तमी, अष्टमी और नवमी - तीन दिन उपवास करे तो सम्पूर्ण नवरात्र के उपवास के फल को प्राप्त करता है।

श्राद्ध के दिनों में एवं नवरात्र में कड़क ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए । इन दिनों संसार-व्यवहार बहुत नुकसानदायक है । 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक के नियमित अध्ययन से ब्रह्मचर्य में मदद मिलेगी।

दर्शन दे दो गुरुदेव...

अँखियाँ तरसें मन बड़ा तड़पे,
दर्शन दे दो गुरुदेव। - २
श्रद्धा के फूल ले के, भावों का दीप ले के।
आये हैं दर पे तेरे, दर्शन दे दो गुरुदेव ॥ अँखियाँ...
मंगल गान करें, तेरा ही ध्यान धरें।
कृपा निधान गुरुदेव, दर्शन दे दो गुरुदेव ॥
अँखियाँ तरसें..

प्रीति का रंग ले के, भक्ति का संग ले के।
तुमको पुकारें गुरुदेव, दर्शन दे दो गुरुदेव ॥
अँखियाँ तरसें...
विनती सुन लो, अर्जी सुन लो।
जल्दी आ जाओ गुरुदेव, दर्शन दे दो गुरुदेव ॥

व्यसनमुक्त समाज की ओर

नशा क्या है ? पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जिसमें शांति न हो उसे 'नशा' कहते हैं। गुटखा, बीड़ी, दारू या कोई भी व्यसन तन-मन को भयंकर हानि पहुँचाते हैं। इनसे इच्छाशक्ति दुर्बल होती है। मनुष्य देवता जैसा बनने के बदले पशु से भी बदतर बन जाता है। इनके चंगुल से मुक्त होने में ही सार है।''

महात्मा बुद्ध कहते थे : ''तुम सुरा देवी से सदा डरते रहना क्योंकि यह सब पापों, अनाचारों की जननी है। यह लत चरित्र का पतन, धन की बरबादी और सामाजिक प्रतिष्ठा को खत्म करके जीवन की सुख-शांति को ग्रहण लगा देती है।''

नशा व्यक्ति को खोखला कर देता है। शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तम्बाकू आदि से शरीर, मन, बुद्धि व संकल्पशक्ति के साथ रोगप्रतिकारक शक्ति भी क्षीण हो जाती है। इससे शरीर कई प्रकार के रोगों का घर बन जाता है, बहुत-से लोग तो अकाल मृत्यु के भी शिकार हो जाते हैं। यह बात नशा करनेवाले को पता तो है परंतु गंदी आदत की ललक के आगे संकल्पबल कमजोर पड़ने से वह व्यसन छोड़ नहीं पाता।

ऐसी स्थिति से निकलने के लिए संतों-महापुरुषों की शरण में जाना ही एकमात्र उपाय है। वे सामर्थ्य, सद्भाव और शुभ संकल्प के अक्षय भंडार होते हैं। उनकी मीठी नजर पड़ने पर असाध्य लगनेवाले कार्य भी सरलता से हो जाते हैं।

पूज्य बापूजी के सत्संगों, शिविरों में उनकी कृपादृष्टि से लोगों को परमात्मा के दिव्य रस की अनुभूति होती है। यह रसानुभूति अवचेतन मन की गहराई तक जाती है, जिससे व्यसनों का रस अति तुच्छ, गंदगी से भरा एवं घृणित महसूस होने लगता है। उल्हासनगर (महा.) के प्रसिद्ध अखबार 'दैनिक धनुषधारी' के सम्पादक श्री दिलीप लालवानी कहते हैं कि ''पहले मैं १५ से २० पैकेट सिगरेट रोज पीता, रोज मांस-मछली खाता और शराब भी खूब पीता था। मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं इन व्यसनों से कभी छूट पाऊँगा लेकिन जब मैं पहली बार पूज्य बापूजी के दर्शन करने गया, तब बापूजी ने कहा : ''ये सब आदतें छोड़ोगे ?''

मैंने पूछा : ''क्या आप छुड़वा सकते हैं ?''

बापूजी ने विनोद करते हुए कहा : ''रखो मूँछ पर हाथ और कहो - आज से छोड़ दिया !''

मैंने भी कहा : ''चलो, छोड़ दिया !''

उसके बाद वे आदतें कैसे छूटीं मुझे पता नहीं।'' श्री लालवानी की तरह ऐसे लाखों-करोड़ों लोग हैं, जिनके जीवन से बापूजी के सत्संग-सान्निध्य के प्रताप से दुर्व्यसन आदि हलकी आदतें छूट गयीं और आज वे सुखी, स्वस्थ व सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

आश्रम-संचालित व्यसनमुक्ति अभियान

आज के इस युग में जहाँ असंख्य लोग व्यसनों की आग में जल रहे हैं, पूज्य संत श्री आशारामजी बापू करीब ५० वर्षों से व्यसनमुक्ति अभियान चला रहे हैं। समाज को व्यसनमुक्त करने की मुहिम सत्संगों-शिविरों, मासिक पत्रिका 'ऋषि प्रसाद', समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु', 'ऋषि दर्शन' डीवीडी मैगजीन एवं सत्साहित्य के माध्यम से जारी है। पूज्य बापूजी की प्रेरणा से देश-विदेश में (शेष पृष्ठ १६ पर)

धन-संग्रह नहीं, धर्म-संग्रह करें (वराह जयंती : २८ अगस्त)

दैत्य हिरण्याक्ष देवताओं को हराकर स्वयं ही उनके लोकों का अधिकारी बन बैठा, देवता स्वर्ग से निकाल दिये गये। इतने पर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने पृथ्वी को रसातल में छिपा दिया । उस समय लोग पाखंडी, पराक्रमशून्य तथा धर्म से विमुख हो गये। दम्भी दैत्य पशुओं के समान आचरणवाले हो गये । तब ब्रह्माजी की नाक से साक्षात् आदिपुरुष परमेश्वर वराहरूप में प्रकट हुए। उन्होंने हिरण्याक्ष को मार के पृथ्वी को रसातल से बाहर निकाला। 'हिरण्य' माने स्वर्ण और 'हिरण्याक्ष' माने जो धर्म को, परमात्मा को, अपने सुख को छोड़कर स्वर्ण अर्थात् धन पर ही दृष्टि रखे।

वराह अवतार का अर्थ है पृथ्वी का प्रेमी । वराह भगवान को यज्ञांग बोलते हैं। उनके एक-एक अंग में यज्ञ भरे हुए हैं। उन्हींसे हमारे जीवन की भूमिका शुद्ध होती है। भगवान वराह शिक्षा देते हैं कि जो लोग केवल अर्थ-दृष्टि रखते हैं, दूसरों को दुःख देकर भी अपने लिए सुख चाहते हैं, धर्म-संग्रह नहीं करते अपितु केवल नश्वर वस्तुओं के

(शेष पृष्ठ १७ पर)

गुरु-शिष्य परम्परा से दूर होगी हिंसा : न्यायाधीश

''हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमारी गुरु-शिष्य परम्परा जारी रहे तो इस हिंसा व आतंकवाद जैसी समस्याओं का समाधान सम्भव है।'' - ये विचार प्रकट करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के बुद्धिमान, सज्जन न्यायाधीश श्री ए.आर. दवे ने कहा कि ''अधिकतर देश लोकतांत्रिक हैं। अगर देश में सभी अच्छे लोग होंगे तो वे स्वाभाविक रूप से किसी अच्छे को ही चुनेंगे। वह चुना गया व्यक्ति किसीको हानि पहुँचाने के बारे में नहीं सोचेगा। सभी लोगों में जब अच्छे संस्कार होंगे तो हर कहीं हिंसा को रोका जा सकता है। इस मकसद के लिए हमें एक बार फिर अपने पुरातन मूल्यों की ओर लौटना होगा।''

उन्होंने कहा : ''अगर मैं भारत का तानाशाह होता तो मैं पहली कक्षा से ही 'गीता' और 'महाभारत' की पढ़ाई लागू कर दी होती। यही वह तरीका है जिससे जीवन जीना सीखा जा सकता है। अगर कोई चीज कहीं अच्छी है तो हमें उसे लेने से परहेज नहीं करना चाहिए।''

इससे पहले सन् २००७ में इलाहाबाद हाईकोर्ट के बुद्धिमान, सज्जन न्यायाधीश श्री एस.एन. श्रीवास्तव ने एक फैसला सुनाते हुए 'गीता' को राष्ट्रीय धर्म शास्त्र के रूप में मान्यता देने के साथ ही इस ग्रंथ को सभी धार्मिक समूहों को पढ़ाये जाने की आवश्यकता पर बल दिया था।

(पृष्ठ ४ का शेष)

अष्टावक्रमुनि ने कहा :

तस्य तुलना केन जायते। (अष्टावक्र गीता : १८.८९)

आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष की किसीसे तुलना नहीं होती।

इन्द्रियों का स्वभाव है बाहर के सुख में भगाना और मन उनके साथ हो जाता है और बुद्धि को घसीटकर ले जाता है तो आदमी तुच्छ हो जाता है। निर्णय कर लो, 'मुझे तो ईश्वरप्राप्ति करनी है!' तो बुद्धि बलवान हो जायेगी, मन को नियंत्रित करेगी और इन्द्रियों को भी ठीक कर देगी।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

उस एक को पाने का इरादा करने से सद्गुण भी आने लगेंगे, सद्बुद्धि भी आने लगेगी,

(पृष्ठ ८ का शेष)

इस व्रत में गणेशजी के पश्चात् शिव-पार्वती का पूजन किया जाता है। तत्पश्चात् पार्वतीजी की तरह सद्गुरु-वचनों का श्रवण-चिंतन और उस अनुसार ईश्वरभक्ति के मार्ग पर अडिगता से चलने का संकल्प किया जाता है। इस दिन उपवास रखकर मौन, जप, ध्यान, जागरण का लाभ

(पृष्ठ ५ का शेष)

वह कन्या मयूर को लेकर वहाँ गयी। यज्ञ में पधारे संत-महापुरुषों की दृष्टि पड़ने से राजा की सद्गति हुई और वह राजा जनक का पुत्र बना।

निंदक से एक बार बातचीत करने से कितना भारी पाप लगता है यह बात इस पौराणिक प्रसंग से स्पष्ट है। तो फिर विचारणीय है कि मीडिया जो संत-निंदा करता है, उसे सुनने व देखने वाले का कितना अहित होता होगा! एक बार निंदा सुनने से उस समय तो व्यक्ति को एहसास नहीं होता परंतु अवचेतन मन में वे संस्कार घर कर जाते हैं और व्यक्ति को नीच योनियों की यात्रा कराते हैं और आदरपूर्वक महापुरुषों का सत्संग सुनना व जीवन में उतारना ७-७ पीढ़ियाँ तार देता है।

अतः निंदा करनेवाले लोगों की बातों की उपेक्षा कर दें। जो न्यूज चैनल, अखबार आदि भारतीय संस्कृति और साधु-संतों के बारे में गलत दिखाते या छापते हैं, उनको बंद करके इनके द्वारा होनेवाले संक्रमण से हम अपने को सुरक्षित करें।

(पृष्ठ १४ का शेष)

स्थित सैकड़ों आश्रमों, समितियों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों तथा बाल संस्कार केन्द्रों द्वारा समाज में इस विषय में जागृति लाने हेतु व्यसनमुक्ति रैलियाँ निकाली जाती हैं, जगह-जगह प्रदर्शनियाँ लगायी जाती हैं, नुक्कड़ नाटिकाओं व संगोष्ठियों (सेमिनारों) का आयोजन किया जाता है। 'नशे से सावधान' पुस्तक, पर्चे, व्यसनमुक्ति पोस्टर आदि बँटवाये जाते हैं, नशे से बचने के उपाय भी बताये जाते हैं, जिससे लाखों-करोड़ों लोग लाभान्वित हुए हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे।

('नशामुक्ति दिवस'- २ अक्टूबर या इसके आसपास के दिन आश्रम एवं समितियाँ 'नशामुक्ति अभियान' का विशेष आयोजन कर सकती हैं।)

(पृष्ठ १५ का शेष)

संग्रह में ही लगे रहते हैं, उनका अंत में क्या होता है। जिसमें धर्म नहीं है, त्याग नहीं है वह तुम्हारा संग्रह अंत में विनाश को प्राप्त होगा।

ब्रह्माजी की नाक से वराह भगवान प्रकट हुए, जिनकी देह सूअर जैसी है। उनका मुँह धरती के साथ लगा होता है। वे धरती को देखते रहते हैं, धरती को चूमते रहते हैं और धरती की जो गंदी-से-गंदी अवस्था है, उसको भी अपना भोग्य बना लेते हैं। जैसे वराह धरती को शुद्ध कर देते हैं, उसी प्रकार हम भी गुरुकृपा का सहारा लेकर साधनारूपी झाड़ू से राग-द्वेष, अहंकाररूपी गंदगी चित्त से झाड़कर बाहर निकाल दें। वराह जयंती हमें यही संदेश देती है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

को रोकने के लिए अपने राज्य में पशुबलि पर सख्त पाबंदी लगा दी थी। इस प्रकार उन्होंने जीवमात्र के प्रति करुणा, प्रेम और सहानुभूति से भरा व्यवहार करके प्रजापालक राजा का आदर्श प्रस्तुत किया। ऐसे भारत माता के महान सुपुत्र, धर्म व संस्कृति के रक्षक-प्रतिपालक तथा संतसेवी एवं ईश्वरभक्त राजा अग्रसेन अंत में अपने पुत्र विभु को राज्य सौंपकर भगवद्भजन में लग गये। राजा अग्रसेन को अग्रवाल समाज के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है।

(पृष्ठ ९ का शेष)

जो चेतना देता है और 'आनंद' स्वभाव, जो आनंदमय बना देता है - उसको जानकर जीवन्मुक्त हो गयी। सुख-दुःख, लाभ-हानि, जन्म-मृत्यु - सब कल्पनामात्र हैं। सारी कल्पनाओं का, सारी परिस्थितियों का आधार जो अपना आत्मा है, उसे गुरुकृपा से ब्रह्मरूप में जानकर वह धन्य-धन्य हो गयी ! उसके दर्शन और वचनों से लोग भी धन्य-धन्य हो गये ! भगवान शिवजी कहते हैं : धन्या माता पिता

वह सत्शिष्य है... - समर्थ रामदासजी

सद्गुरु-कृपा के बल से ही अपरोक्ष ज्ञान के होने से सत्शिष्य को मायासहित सारा ब्रह्मांड तुच्छ मालूम होता है। जिन्होंने अविश्वास से सद्गुरु का सहारा छोड़ दिया है, ऐसे बहुत-से इस भवसागर में डूब गये। उन्हें सुख-दुःखरूप जलचरों ने बीच में ही नोच खाया। सद्गुरु-वचनों पर जिसे दृढ़ विश्वास है, वही सत्शिष्य है और वही सबसे पहले मोक्ष का अधिकारी है। सद्गुरु के बतलाये हुए मार्ग पर चलते हुए चाहे सारा ब्रह्मांड भी क्यों न उसके विरुद्ध हो जाय तथापि उसकी गुरुभक्ति में कुछ भी फर्क नहीं होता। सत्शिष्य सद्गुरु की शरण कभी नहीं छोड़ते और सदाचारी बनकर ईश्वर की तरह पवित्र होते हैं।

बालकों के लिए उत्तम आहार : देशी गाय का दूध

माँ के दूध के अलावा जब बच्चा अन्य आहार लेने लगता है, तब देशी गाय का दूध उन शिशुओं के लिए सबसे उत्तम आहार है। गोदुग्ध में क्षार अधिक होते हैं तथा पाचक रसों का पर्याप्त समावेश होता है, जिससे इस दूध को बालक का कोमल पाचन-तंत्र सरलता से पचा लेता है। गाय का दूध बुद्धि व स्फूर्ति वर्धक भी है।

भैंस के दूध में प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस जैसे तत्त्व माँ तथा गाय के दूध की तुलना में अधिक होते हैं, जिससे पाँच वर्ष तक के शिशु का गुर्दा उन्हें सहन नहीं कर पाता और उसके गुर्दे में पथरी बनने लगती है। इसलिए बच्चों को भैंस के बजाय गाय का दूध देना चाहिए।

गर्भिणी और गर्भस्थ शिशु दोनों के लिए जरूरी है गोदुग्ध

प्रसव के पूर्व माँ के गर्भ में जब बालक का निर्माण होता है, उस समय यदि माँ को गोदुग्ध दिया जाय तो उसके स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ता है और गर्भस्थ शिशु की वृद्धि भी सही ढंग से होती है। प्रसव के बाद स्तनपान काल में भी माँ को गोदुग्ध का सेवन कराया जाय तो स्तनपान कराने से शरीर में जिन तत्त्वों की आवश्यकता उत्पन्न होती है, उनकी पूर्ति भली प्रकार हो जाती है।

यदि कोई बच्चा भारतीय नस्ल की गाय का दूध बचपन में तीन वर्ष भी सेवन कर ले तो वह मानसिक और शारीरिक रूप से इतना सक्षम हो सकता है कि वह अपने जीवन में कम-से-कम बीमार पड़ेगा (जैसे पूज्य बापूजी)। कोई कुपोषित बच्चा हो तो उसे मात्र एक वर्ष ऐसा दूध मिल जाय तो उसका कुपोषण दूर हो जायेगा। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के अनुसार गोदुग्ध माता के दूध के बाद सबसे अधिक उपयोगी है।

पुण्यदायी तिथियाँ

- **९ सितम्बर** श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ
- **१४ सितम्बर** रविवारी सप्तमी (शाम ६-४० से १५ सितम्बर सूर्योदय तक)
- **१७ सितम्बर** षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३३ तक)
- **१८ सितम्बर** गुरुपुष्यामृत योग (रात्रि ३-२५ से १९ सितम्बर सूर्योदय तक)
- **१९ सितम्बर** इंदिरा एकादशी (बड़े-बड़े पापों का नाश करनेवाला तथा नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी सद्गति देनेवाला व्रत)
- **२३ सितम्बर** सर्वपित्री दर्श अमावस्या (आश्रम की विभिन्न शाखाओं में सामूहिक श्राद्ध का आयोजन)
- **२५ सितम्बर** से **३ अक्टूबर** शारदीय नवरात्र
- **२६ सितम्बर** पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ५०वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस
- **१ अक्टूबर** बुधवारी अष्टमी (दोपहर १-५० से २ अक्टूबर सूर्योदय तक)
- **३ अक्टूबर** दशहरा, विजयादशमी (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक, विजय मुहूर्त (संकल्प, शुभारम्भ, नूतन कार्य, सीमोल्लंघन के लिए) दोपहर २-२७ से ३-१४ तक) (विजयादशमी स्वयंसिद्ध मुहूर्त है अर्थात् इस दिन कोई भी शुभ कर्म करने के लिए शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती)
- **५ अक्टूबर** पापांकुशा-पाशांकुशा एकादशी (स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्य, धन एवं मित्र देनेवाला, सब पापों को हरनेवाला, यम-यातना से मुक्त करनेवाला तथा माता, पिता व स्त्री पक्ष की दस-दस पीढ़ियों का उद्धार करनेवाला व्रत)

पपीता : एक उत्तम टॉनिक

पका हुआ पपीता वायु व पित्त दोषनाशक, वीर्यवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, मल-मूत्र साफ लानेवाला तथा यकृत व तिल्ली वृद्धि, मंदाग्नि, आँतों के कृमि एवं उच्च रक्तचाप आदि रोगों में लाभकारी है। छोटे बच्चों और दूध पिलानेवाली माताओं के लिए पपीता टॉनिक का काम करता है। यह पाचनशक्ति को सुधारता है। जिन्हें कब्ज की शिकायत हमेशा रहती है, उन्हें पका पपीता नियमित खाना चाहिए।

पपीते में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है, जिससे नेत्रज्योति बढ़ती है और रतौंधी रोग ठीक होता है। इसमें विद्यमान विविध एंजाइमों के कारण आँतों के कैंसर से रक्षा होती है। पपीते को शहद के साथ खाने से पोटैशियम तथा विटामिन 'ए', 'बी', 'सी' की कमी दूर होती है।

❊ औषधीय प्रयोग ❊

अजीर्ण एवं कब्ज : पके पपीते पर सेंधा नमक, जीरा और नींबू का रस डालकर कुछ दिन नियमित सेवन करने से मंदाग्नि, कब्ज, अजीर्ण तथा आँतों की सूजन, अपेंडिक्स में लाभ होता है।

दाँतों के रोग : पके पपीते में विटामिन 'सी' काफी मात्रा में होता है। अतः दाँतों के हिलने या खून आने में पपीता खाने से लाभ होता है।

बवासीर : सुबह खाली पेट पपीता खाने से शौच साफ होगा व बवासीर में आराम मिलेगा।

बच्चों का विकास : रोज थोड़ा पपीता खिलाने से बच्चों का कद बढ़ता है, शरीर मजबूत एवं तंदुरुस्त बनता है।

दूधवृद्धि : पपीता खाने से दूध पिलानेवाली माताओं का दूध बढ़ जाता है।

पेट में कीड़े : कच्चे पपीते का रस २० ग्राम सुबह पीने से पेट के कीड़े नष्ट होते हैं।

सावधानियाँ : (१) ये सभी गुण प्राकृतिक रूप से पेड़ पर पके हुए देशी पपीतों के हैं, इंजेक्शन अथवा रसायन द्वारा पकाये गये या फुलाये गये पपीतों में ये गुण नहीं पाये जाते। अतः देशी पपीते का ही उपयोग करना चाहिए।

(२) सगर्भावस्था में, मासिक स्राव अधिक आने पर, खूनी बवासीर व गर्मी से उत्पन्न बीमारियों में तथा गर्म तासीर एवं पित्त व रक्त विकारवाले पपीते का सेवन न करें।

(३) कच्चा पपीता आँतों का संकोचन करनेवाला तथा कफ, वायु व पित्त वर्धक होता है, अतः सर्वथा निषिद्ध है।

बिस्कुट व केक से कैंसर का खतरा

स्वीडन (यूरोप) में हुए एक ताजा अध्ययन के अनुसार जो महिलाएँ हफ्ते में दो या तीन बार बिस्कुट या केक अल्पाहार के रूप में खाती हैं, उनमें ३३ प्रतिशत तक गर्भाशय कैंसर का खतरा होता है। इससे ज्यादा बार खाने से खतरा ४२ प्रतिशत तक बढ़ जाता है। पिछले १० वर्षों से चल रहे इस अध्ययन में ६०,००० महिलाओं के खानपान की आदतों पर नजर रखी गयी थी। अकेले ब्रिटेन में प्रति वर्ष ६४०० महिलाएँ इस बीमारी की चपेट में आती हैं और कई तो मौत की शिकार हो जाती हैं। अल्पाहार में तैयार बाजारू खाद्य पदार्थ, फास्टफूड आदि खाने से मोटापा भी बढ़ता है, जो बीमारियों की जड़ माना जाता है।

स्वास्थ्य के सरल प्रयोग

पेटदर्द : (१) १ चुटकी अजवायन को चने के बराबर गुड़ के साथ खाकर पानी पीने से पेटदर्द में राहत मिलती है।

(२) अजवायन व काला नमक ८-८ भाग तथा हींग १ भाग - तीनों को पीसकर रख लें। पेट में दर्द, भारीपन या वायु होने पर १ ग्राम चूर्ण गर्म पानी से दिन में दो बार लेने से शीघ्र राहत मिलती है।

भाव के साथ विवेक जरूरी है

- पूज्य बापूजी

एक भक्त सोचता था, 'जिन महापुरुष की वाणी से हृदय में शीतलता आती है उनकी सेवा करने का मौका मिले, ऐसे दिन कब आयेंगे ?'

एक बार गुरु महाराज और उनके मित्रसंत भोजन कर रहे थे और वह भक्त वहाँ खड़ा था।

गुरुजी : ''तू यहाँ क्यों खड़ा है ?''

भक्त :''गुरुजी ! कुछ सेवा करना चाहता हूँ।''

गुरुजी : ''अच्छा, तू इनको पंखा झल।''

वह बड़ा गद्‌गद हो गया कि 'मैं कितना भाग्यशाली हूँ... संतों की सेवा कर रहा हूँ ! आहाहा...' ऐसा करते-करते भाव-भाव में वह धड़ाम से उनकी थाली पर गिर पड़ा।

अब यह सेवा थी कि मुसीबत ? उनका तो खाना खराब हुआ और इधर इसकी आँखों में थाली के भोजन के कण चले गये।

जहाँ सेवा करनी है वहाँ भावुकता नहीं बल्कि सेवा का विवेक चाहिए। भाव के साथ विवेक बड़ा जरूरी है।

'पंचतंत्र' में एक कथा आती है :

एक राजा शिकार पर निकला। उसे एक भालू मिला। पूर्वजन्म में वह राजा का मित्र था। राजा पशुओं की भाषा जानता था। दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया। राजा ने कहा : ''यार ! तू छोटे कर्मों से भालू बना और मैं कुछ अच्छे कर्मों से राजा बना हूँ लेकिन हम हैं जिगरी दोस्त !'' दोनों बड़े प्यार से मिले।

भालू : ''मैं आपकी सेवा करूँगा, आपका अंगरक्षक बनूँगा।''

राजा सहमत हो गया। अब वह जब शयन करे तो भालू उसके इर्दगिर्द चक्कर मारे।

एक बार श्राद्ध का दिन था। दोपहर को राजा ने खीर खायी और सो गया। उसके होंठों के इर्दगिर्द मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं। भालू ने अपने एक हाथ का झटका मारा तो मक्खियाँ भाग गयीं किंतु फिर आ गयीं। उसने ५-१० बार मक्खियाँ भगायीं। आखिर में भालू अपने स्वभाव में आ गया और म्यान में से तलवार खींचकर दोनों हाथों से जोरों से दे मारी। मक्खियाँ तो पहले ही उड़ गयीं, राजा की गर्दन कट गयी।

भालू का भाव तो अच्छा था, राजा की गर्दन काटने का उसका भाव नहीं था लेकिन विवेक की कमी थी। उसने तो अपने मित्र का गला काटा जबकि विवेक की कमी के कारण हम अपने-आपको ही मारते चले जा रहे हैं। एक-दो जन्म नहीं, पाँच-पचीस-पचास जन्म नहीं, हजार जन्म नहीं, लाख जन्म नहीं, कितनी चौरासियाँ (चौरासी लाख योनियों के चक्र) हम अपने को मारते ही चले गये क्योंकि मरनेवाले शरीर को 'मैं' माना, मिटनेवाली चीजों को 'मेरा' माना और वास्तव में 'मैं' क्या हूँ इसका विवेक नहीं किया। अतः बार-बार जन्म-मरण होता ही रहा। इसलिए सत्संग और विवेक का आश्रय लो।

अमृतबिंदु

''हम जितना महत्त्व संसार को देते हैं, उतना महत्त्व अगर ईश्वर को दें तो सचमुच फिर देर नहीं है, आप ईश्वर हैं ही।''

''ईश्वर दुर्लभ नहीं है, सर्वत्र और सदा है लेकिन उसकी प्राप्ति की इच्छा होना दुर्लभ है और उसकी प्राप्ति करानेवाले ईश्वरप्राप्त महापुरुष का मिलना और भी दुर्लभ है।''

''यदि मनुष्य विवेकबुद्धि करके सदैव सतर्क एवं सावधान रहे तो उसे कोई भी विपरीत परिस्थिति हिला नहीं सकती।'' - पूज्य बापूजी

'महिला सर्वांगीण विकास शिविरों' के कुछ दृश्य

रायपुर (छ.ग.)

सती अनसूया आश्रम, अहमदाबाद

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

देशभर में विद्यालयों में हुए 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों' की कुछ झलकियाँ

हैदराबाद

राजकोट (गुज.)

भिवानी (हरि.)

दिवड़ा बड़ा, जि. डुंगरपुर (राज.)

रोतवाड़ा, जि. डुंगरपुर (राज.)

सम्बलपुर (ओड़िशा)

अमरावती (महा.)

दिवड़ा छोटा, जि. डुंगरपुर (राज.)

पिंपरी, जि. पुणे (महा.)

नादौन (हि.प्र.) एवं भुवनेश्वर में 'ज्योत-से-ज्योत जगाओ' सम्मेलन

वाराणसी

करोलबाग-दिल्ली

रुड़की (उत्तराखंड)

हैदराबाद के गरीबों में प्रति माह निःशुल्क सामग्री वितरण हेतु राशनकार्ड एवं जीवनोपयोगी सामग्री वितरण

पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु रुद्राभिषेक एवं हवन

जप-माला पूजन कार्यक्रम

प्राचीन भारतीय परम्पराओं की सुरक्षा एवं पुनर्जागरण

गोरखपुर (उ.प्र.)

उल्हासनगर (महा.)

भैरवाँ (नेपाल)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2014
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

बैंगलोर

डोंबिवली (महा.)

बीजापुर (कर्नाटक)

सोलापुर (महा.)

पूज्य बापूजी एवं संतों पर हो रहे अन्याय के विरोध में विभिन्न हिन्दू संगठनों ने दिये धरने

पढ़ें पृष्ठ १२

संकीर्तन यात्राओं व प्रभातफेरियों द्वारा सत्य का प्रकाश फैलाते बापूजी के साधक

पठानकोट (पंजाब)

इंदौर

कैलिफोर्निया

ऋषिकेश

जोधपुर

लखनऊ

जमशेदपुर (झारखंड)

हरिद्वार

जैसलमेर (राज.)

बाड़मेर (राज.)

फरीदाबाद (हरि.)

रायपुर

दिल्ली

गाजियाबाद (उ.प्र.)

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

धरमपुरा, जि. रायपुर (छ.ग.)

गुजरात में उठी सुप्रचार की लहर... गाँव-गाँव, शहर-शहर में निकल रहीं संकीर्तन यात्राएँ

चकलासी, जि. खेड़ा

कासोर, जि. आणंद

पानसोरा

पेटलाद

वासद

सारसा, जि. आणंद

भेटासी

आणंद

बोरसद

नंदेसरी-बड़ौदा

ओड, जि. आणंद

सोजित्रा, जि. आणंद

पालनपुर पाटिया-सूरत

बड़ौदा

डाकोर, जि. खेड़ा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।